International Journal of Information Movement Vol.2 Issue IX January 2018)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 48-50

भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य

डॉ.जिनो पी.वरुगीस
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग, मारतोमा कॉलज
चुनगतरा, मलप्पुरम, केरल
E mail : jpvjino@gmail.com

भूमिका

इक्कीसवीं सदी में समय ,समाज, संस्कृति ,देश और भाषा में परिवर्तन आ रहा है । परन्तु इसमें घबराने की आवश्यकता नहीं है । परिवर्तन युग की मांग है । इस परिवर्तन का अन्य एक नाम है ' भूमंडलीकरण ' अर्थात ग्लोबलाइजेशन (Globalization) । आज यह शब्द अपेक्षाकृत नया और काफी प्रचलन में आया शब्द है । इसे हिंदी के साथ जोड़कर अक्सर सुना जाता है । हिंदी भाषा और साहित्य पर इसका प्रभाव गहरा है । भूमंडलीकरण हिंदी साहित्य जगत को रूपायित किया है। इस सन्दर्भ में ग्लोबल होती हिंदी साहित्य पर चर्चा अनिवार्य है ।

मूल शब्द : भूमंडलीकरण ,हिंदी साहित्य

ऑनलाईन हिंदी साहित्य (Online Hindi Literature)

आज हिंदी साहित्य सूचना क्रांति, सैटेलाइट क्रांति ,डिजिटल क्रांति के संपर्क से भूमंडलीकरण या वैश्वीकरण का लाभ उठा रहा है । इसका स्पष्ट प्रमाण है इंटरनेट में हिंदी साहित्य की लोकप्रियता । इंटरनेट पर आज हिंदी के नाटक, कहानी, उपन्यास के साथ-साथ हिंदी साहित्यकार एवं महापुरुषों की जीवनियाँ, भेंटवार्ताएें आदि भी उपलब्ध हैं । इसके साथ ही प्रकाशकों ने अपनी-अपनी वेबसाईट बना रखी है जिसके द्वारा ही अनेक रचनाकरों की महत्वपूर्ण पुस्तकें पाठकों को घर बैठे मिल जाती हैं । आज ई-संस्करण की सुविधा से हिंदी के कई पुस्तकें पाठकों को अपने काम और रुचि के अनुसार चयन कर सकते हैं । हिंदी के अनेक पत्रिकाओं का ई-संस्करण जारी किए हैं । तदनुसार आज 'हंस', ' वागार्थ' , ' कथादेश ', 'तद्भव ', ' नया ज्ञानोदय ', 'मधुमति' और ' वाङमय ' जैसे पत्रिकाऐं इंटरनेट पर उपलब्ध है । साथ ही प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक के श्रेष्ठ हिंदी साहित्य के एक लाख पृष्ठ इंटरनेट पर डाले जा रहे है, ताकि देश-विदेश के हिंदी प्रेमी घर

बैठे पुस्तकों को पढ सकें । भक्तिकालीन कवि तुलसी कृत ' रामचरितमानस ' अब डिजिटल रूप में इंटरनेट पर उपलब्ध है । इस प्रकार कबीर, रहीम, सूर, प्रेमचंद, भारतेंदु हरिश्चन्द्र, रामचन्द्र शुक्ल और समकालीन हिंदी साहित्यकरों के रचनाऐं भी इंटरनेट में उपलब्ध है । *महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय , वर्धा* ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से हिंदी का संपूर्ण श्रेष्ठ साहित्य को कंप्यूटर पर उपलब्ध कराया है । यह *हिंदी समय* वेब पर देखा जा सकेगा । आजकल स्वतंत्र अभिव्यक्ति केलिए ब्लॉग एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है । बहुत सी हिंदी साहित्यकार इसका इस्तेमाल कर सकते हैं । इस प्रकार ' फेसबुक' , ' व्हाट्सएप्प' जैसे सोश्यल मीडिया में भी हिंदी साहित्यकार सक्रिय है । आज विभिन्न भाषाओं की कृतियाँ हिंदी में और हिंदी कृतियाँ विदेशी भाषाओं में अनुदित होकर उपलब्ध हो रही है । साथ ही ये रचनायें इंटरनेट में भी उपलब्ध है । जे.के रॉलिंग कृत हैरी पॉटर ,चेतन भगत की रचनाऐं, प्रेमचन्द, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की रचनाऐं भी अनुवाद के सशक्त उदाहरण हैं। अतः भाषिक वैश्वीकरण में अनुवाद का स्थान महत्वपूर्ण है ।

ऑफलाइन हिंदी साहित्य (Offline Hindi Literature)

ऑफलाइन हिंदी साहित्य का मतलब सामान्य हिंदी साहित्य से है । टेक्नोलॉजी और विज्ञान ने हिंदी के इस साहित्य रूप को भी विस्तार करके उसे एक नूतन स्वरुप प्रदान कर दिया है । आज हिंदी साहित्य पर भूमंडलीकरण का सशक्त प्रभाव दृष्टव्य है । अब हिंदी के साथ अंग्रेज़ी और सामान्य बोलचाल की भाषा का मिश्रण आम बात हो गयी है । अतः हिंदी साहित्य भी नई वाली हिंदी का स्वरुप ग्रहण किया है । इस नई वाली

हिंदी ने अंग्रेज़ी पाठकों को भी हिंदी की ओर आकर्षित किया है और साथ ही हिंदी में बोलने ,लिखने और पढ़ने में गर्व का अनुभव महसूस कराते है। हिंदी साहित्य के विभिन्न विधाओं में भूमंडलीकरण का असर प्रकट है। हिंदी कविता में वैश्वीकरण और बाज़ारवाद के प्रभाव को रेखांकित किया गया है। बाज़ार के विविध रूप और दृश्यों जैसे - शेयर बाज़ार ,संवेदी सूचकांक ,मुद्रास्फीति ,तेल की कीमतें ,महाजनी पूंजी ,विज्ञापन ,विश्वबैंक ,टेलीविज़न ,कंप्यूटर, उपभोक्तावाद,उद्योग ,पर्यावरण ,बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, मीडिया ,मुनाफा ,भृष्टाचार ,दूकान ,रिश्वत ,व्यवहार ,नये अर्थशास्त्रीय सिद्धांत ,किसानों की आत्महत्याएं आदि संबन्धी सूचनाएं एवं संकेत आते है। बाज़ार आज की कविता का मुख्य बीज शब्द के रूप में बदल गया है। बाज़ार जिस तरह से दिखता है ,उसी प्रकार का नहीं होता। यहां चमत्कारों के उत्पादन का सबसे बड़ा व्यापार होता है। इस व्यापार से कवि मंगलेश डबराल मनुष्य की आत्मीयता ,प्रेम, सुख तथा शांति को बचाना चाहता है। उसकी ' बाज़ार ' शीर्षक कविता मीड़िया की प्रभुता में जमे बाज़ार के नकलीपन का पर्दाफ़ाश करती है। कवि कहते है कि -- जिस तरह दिखता है

वह उस तरह नहीं होता
यह बाज़ार का एक
ठोस आध्यात्मिक आधार है
इसलिए चमत्कारों का
उत्पादन सबसे बड़ा व्यापार है
मसलन शांति नाम का यह
आरामदेह सोफ़ा लीजिए
जिसके बीच में रखने केलिए
यह पारदर्शी मेज़ है
बैठने के कुछ ही बाद
प्रकट होता है एक शांत विचार और
सुख की नींद केलिए तो यह
बिस्तर मशदूर ही है
जिसकी विज्ञापन करते हुए
कई सुंदरियाँ बूढ़ी हो चली है[1]।

हिन्दी कवियों ने भूमंडलीकरण पर भयावह दृष्टिकोण से बार-बार चिंता प्रकट की है। हिन्दी कहानी साहित्य में भी भूमण्डलीकरण का प्रभाव प्रकट है। राजेश जैन की कहानी 'क्यू में खड़ी उदासी' बहुराष्ट्र कंपनियों में काम करनेवाले युवा लोगों के धीरे -धीरे रोबोट बनते चले जाने का और मानवीय संवेदनाओं से कटते जाने का सबसे अच्छा उदाहरण है। इसप्रकार एकान्त श्रीवास्तव ने अपनी कहानी 'लड़की और आम ' में बाज़ारवादी वैश्विक जीवन का वर्णन किया है। गीत चतुर्वेदी की कहानी 'सिमसिम' में आज हिंदी भाषा पर होने वाला भूमण्डलीकरण का सशक्त प्रभाव दृष्टव्य है। उदाहरण के रूप में इस कहानी के कुछ अंश प्रस्तुत करना चाहता हूँ – " सामने कंप्यूटर पर जीमेल खुला हुआ है। उसके ऊपर गूगल टॉक की विंडो खुली हुई है, और रह रह कर चमक रही है। उस तरफ से किसी 'मेरा नाम जॉकर का सन्देश आया है - wru ? वह आखिरी सन्देश है। उसके ऊपर मी जो शायद लड़की है, की तरफ से भेजा गया सन्देश है - m not cnfm.jst waitn.waitn,waitn :-c मेरी हिम्मत नहीं होती कि में कंप्यूटर की तरफ देखूँ [2]। कविता, कहानी की भांति उपन्यास साहित्य में भी आज भूमण्डलीकरण सशक्त रूप से विद्यामान है। प्रदीप सौरभ,अलका सरावगी जैसे रचनाकारों ने अपने उपन्यासों में भूमण्डलीकरण का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। प्रदीप सौरभ का ' मुन्नी मोबाइल ' और अलकासरावगी का ' एक ब्रेक के बाद ' उपन्यासों में भूमण्डलीय व्यापार जगत, मोबाइल क्रान्ति, इंडिया की इकोनॉमी कल्चर, मल्टीनेशनल कंपनियों के दिग्गज प्रबंधन अधिकारियों, विकास की द्रुत गति, समकालीन कला बाज़ार (आर्ट मार्केट),नयी पीढ़ी और उसकी यौनिक स्वतंत्रता आदि पर केंन्द्रित है। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के अन्य विधाओं में भी भूमंडलीकरण का सशक्त प्रभाव दृष्टिगत होते हैं।

अब हिंदी और हिंदी साहित्य वर्चुअल वल्ड में अपना अस्तित्व में स्थिरता लायी है। हिंदी साहित्य को वैश्विक बनाने केलिए यह बहुत आवश्यक है कि आज के लेखक वर्तमान समय की सच्चाईयों और प्रवृत्तियों को पहचानकर और परिणतियों को समझकर रचना करें।

संदर्भ

1. संग्रथन , अंक : 9 ,वर्ष : 28 , मार्च : 2015 ,पृष्ठ : 50 से उद्दत
2. गीत चतुर्वेदी , सिमसिम ,प्रगतिशील वसुधा ,कहानी विशेषांक -1 , पृष्ठ -314, 2008-2009